मधुबन की महिमा

1– खुशियों की भरमार लिए, जैसे बहारों का बसंत हो मधुबन,

उर्जा का प्रचंड प्रवाह करे,ये पाण्डवपति का तपोवन,

भाग्यविधाता जिसका माली,अति सुन्दरतम् अद्भुत ये उपवन,

एशलम बनेगा अन्त में सबका,ये तीर्थस्थान अति मनभावन।

2–बाबा मम्मा और दादियाँ,जिनकी कर्मस्थली यह मधुबन,

धवल पहन पोशाक विचरते, फरिश्तों का यह आँगन,

अर्बुदा के आँचल में स्थित,प्रभु का प्रिय यह नंदन वन,

रूहानियत की खुशबू चंदन सी बिखेरे,मन करे इसे वंदन–वंदन।

3– प्रजापिता जहाँ तप ऐसा करते,जैसे अजन्ता एलोरा की गुफाएं,

और यहाँ सदा लहराते देखा,प्रभु प्रेम में मस्त हवाएं,

गिरि को यहाँ ही झुकते देखा,और राग बरसाती घटाएं,

हर कण कहता झूम–झूम कर,अवर्णनीय प्रभु लीलाएं।

4–महिमा करूँ क्या उसकी,जिस पर वरद हस्त वरदाता का,

किन शब्दों में उसका वर्णन करूँ,सानिध्य जिसे जगत पिता का,

क्या मनमोहक छवि दिखाऊँ उसकी,प्रकृतिपति ने जिसमें रंग भरा,

यह उपवन त्रिभुवन का ऐसा,जहाँ काँटा फूल बनकर खिला।

ओम शान्ति